उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्याय 8

युगांतशास्त्र का विकास

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय..1

मूसा का युगांतशास्त्र..1

वाचाई चक्र..1

वाचायी पराकाष्ठा..2

आरंभिक भविष्यवक्ताओं का युगांतशास्त्र..3

मूसा के साथ समानताएं..4

मूसा के अतिरिक्त बातें..4

राजतंत्र..5

मन्दिर..5

गैरयहूदी..6

बाद के भविष्यवक्ताओं का युगांतशास्त्र..8

यिर्मयाह की अपेक्षा..8

दानिय्येल की अन्तर्दृष्टि..9

अंतिम दृष्टिकोण..11

आरंभिक आशाएं..11

अंतिम आशीषें..11

नए नियम का युगांतशास्त्र..12

शब्द..12

सुसमाचार..12

राज्य..13

बाद के दिन..14

संरचना..14

यूहन्ना बपतिस्मादाता..14

यीशु..15

विषय..15

बंधुआई..15

पुनर्स्थापना..16

उपसंहार..17

परिचय

जब मैं बढ़ रहा था तो मेरा परिवार हमेशा कार से छुट्टियाँ मनाने जाया करता था, और हमें स्पष्ट रूप से पता होता था कि हमें कहां जाना था, और हम उस मंजिल तक पहुंच जाया करते थे। परन्तु इसके साथ-साथ मार्ग में कई ऐसी बातें होती थीं जो उस योजना को विकसित करती थीं। जैसे किसी एक स्थान पर उम्मीद से ज्यादा रूकना, या पहिये में से हवा निकल जाना इत्यादि।

पुराने नियम की भविष्यवाणी के साथ भी कुछ ऐसा ही होता है। परमेश्वर के पास संपूर्ण मानवीय इतिहास के लिए एक सर्वोच्च योजना है, और वह योजना अपनी मंजिल तक अवश्य पहुंचेगी, और मार्ग के हर कदम की योजना परमेश्वर ने सर्वोच्च रूप में बनाई हुई है। परन्तु इसके साथ-साथ हम यह जानते हैं कि अपने विधान में परमेश्वर यह देखता रहता है कि मनुष्य किस प्रकार भविष्यवाणी के प्रति प्रतिक्रिया देंगे, और जब वे किसी एक रूप में प्रतिक्रिया देंगे तो वह भी उसी रूप में प्रत्युत्तर देगा; और जब वे किसी अन्य रूप में प्रतिक्रिया देंगे तो वह भी किसी अन्य रूप में प्रत्युत्तर देगा। और फिर हम पाते हैं कि नियति, या एस्खाटोन, पूरी बाइबल में विकसित होती जाती है। जैसे-जैसे बाइबल आगे बढ़ती है, वैसे-वैसे परमेश्वर प्रकट करता रहता है कि वह अपने लोगों के साथ क्या करने वाला है।

हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है, "युगांतशास्त्र का विकास" क्योंकि हम देखेंगे कि अंत समय का भविष्यवाणिय दर्शन भविष्यवाणी के भिन्न-भिन्न चरणों में किस प्रकार से विकसित हुआ। हम अंत समय के वर्णन के चार मुख्य चरणों को देखेंगे जिन्हें हमें सदैव याद रखना आवश्यक है: पहला, मूसा का युगांतशास्त्र; दूसरा, आरंभिक भविष्यवक्ताओं का युगांतशास्त्र; तीसरा, हम बाद के भविष्यवक्ताओं के युगांतशास्त्र को देखेंगे; और फिर चौथा, हम नए नियम के युगांतशास्त्र पर ध्यान देंगे। आइए पहले हम उन दृष्टिकोणों को देखें जो मूसा की ओर से आते हैं।

मूसा का युगांतशास्त्र

क्या आपने कभी अपने जीवन में कठिन समयों का अनुभव किया है और एकमात्र बात जिसने आपको उनमें सहायता की वह यह थी कि एक दिन ये कठिन समय निकल जाएगा? कई रूपों में मूसा ने इस प्रकार का दृष्टिकोण इस्राएल को दिया था। उसने इस्राएल को बताया था कि कठिन समय आने वाले हैं, जिनमें प्रतिज्ञा की भूमि से बंधुआई में जाना भी शामिल होगा, परन्तु उसने उन्हें आशा भी दी, युगांत या अंत समय की आशा, कि एक दिन सब कुछ बेहतर हो जाएगा। मूसा के दृष्टिकोण को समझने के लिए हमें वाचा के कुछ आधारभूत प्रभावों को देखना होगा जिन्हें हम पिछले अध्यायों में पहले ही देख चुके हैं: पहला, वाचाई चक्र; और दूसरा वाचाई पराकाष्ठा

वाचाई चक्र

आपको याद होगा कि मूसा समझ गया था कि परमेश्वर अपने लोगों की वफादारी को परखेगा और कि उसके लोग प्रायः उसमें असफल होंगे। फलस्वरूप, मूसा ने सिखाया कि दण्ड और आशीष के चक्र परमेश्वर और उसके लोगों के बीच संबंध की विशेषता बनेंगे। जब परमेश्वर के लोगों ने जानबूझकर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसके विरूद्ध विद्रोह किया तो उन्होंने युद्ध और प्रकृति में दण्ड का अनुभव किया। जब परमेश्वर के लोग उसके प्रति विश्वासयोग्य रहे, तो उन्होंने युद्ध और प्रकृति में आशीष का अनुभव किया। आशीष और दण्ड के बीच यह चक्रीय वाचायी प्रारूप सारे पुराने नियम में कई बार प्रकट होता है।

वाचायी पराकाष्ठा

मूसा के लेखनों में युगांतशास्त्र आशीष और दण्ड के आधारभूत प्रारूप से विकसित होता है। मूसा के अनुसार वाचा के दण्ड और आशीषें एक ऐसे अनन्त चक्र में जारी नहीं रहेंगी, जिसकी कोई दिशा और लक्ष्य न हो। इसके विपरीत, मूसा ने भविष्य में एक निश्चित अंत या मंजिल को देखा। इस बात को समझने के लिए कि मूसा ने किस प्रकार वाचायी जीवन के अंत को सिखाया, हमें इतिहास के विषय में उसके दृष्टिकोण के तीन घटकों को देखना जरूरी है: पहला, बंधुआई; दूसरा, पश्चाताप और क्षमा; और तीसरा, बंधुआई से निकलकर पुनर्स्थापना।

पहला, मूसा का मानना था कि जैसे-जैसे इस्राएल परमेश्वर से दूर होता जाएगा तो दण्ड भी बढ़ता जाएगा। इस दण्ड का अंत प्रतिज्ञा की भूमि से इस्राएल की बंधुआई के साथ होगा। परमेश्वर के लोग युद्ध में पराजित होंगे, और प्रतिज्ञा की भूमि में सामंजस्य की प्रकृति भ्रष्टाचार की प्रकृति में बदल जाएगी। परमेश्वर के लोग राष्ट्रों के बीच तितर-बितर हो जाएंगे और प्रतिज्ञा की भूमि खण्डहरों में बदल जाएगी। सुनिए मूसा इसे व्यवस्थाविवरण 4:25-28 में कैसे कहता है:

> यदि उस देश में रहते रहते बहुत दिन बीत जाने पर, और अपने बेटे-पोते उत्पन्न होने पर, तुम बिगड़कर किसी वस्तु के रूप की मूर्ति खोदकर बनाओ, और इस रीति से अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति बुराई करके उसे अप्रसन्न कर दो, तो मैं आज आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे विरुद्ध साक्षी करके कहता हूँ, कि जिस देश के अधिकारी होने के लिये तुम यरदन पार जाने पर हो उस में तुम जल्दी बिल्कुल नाश हो जाओगे, और बहुत दिन रहने न पाओगे, किन्तु पूरी रीति से नष्ट हो जाओगे। और यहोवा तुम को देश देश के लोगों में तितर बितर करेगा, और जिन जातियों के बीच यहोवा तुम को पहुंचाएगा उन में तुम थोड़े ही से रह जाओगे। और वहां तुम मनुष्य के बनाए हुए लकड़ी और पत्थर के देवताओं की सेवा करोगे, जो न देखते, और न सुनते, और न खाते, और न सूंघते हैं। **(व्यवस्थाविवरण 4:25-28)**

हम यहां पर देखते हैं कि मूसा ने भविष्यवाणी की कि एक भयानक बंधुआई आएगी, परन्तु यह बंधुआई जितनी भी भयानक हो वह इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा के इतिहास का अंत नहीं होगी। पश्चाताप और क्षमा बंधुआई की परिस्थितियों को बदल सकते थे। जैसा कि मूसा 4:29 में लिखता है:

> परन्तु वहां भी यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढ़ोगे, तो वह तुम को मिल जाएगा, शर्त यह है कि तुम अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से उसे ढूंढ़ो। **(व्यवस्थाविवरण 4:29)**

एक बार जब बंधुआई आ गई, तब लोगों को होश आ सकता था और वे पश्चाताप करके परमेश्वर से क्षमा पा सकते थे।

इस पश्चाताप और क्षमा का परिणाम क्या होगा? संक्षेप में, यह बंधुआई से लौट कर पुनर्स्थापना होगा। मूसा ने सिखाया कि परमेश्वर अपने लोगों पर दया करेगा और अकल्पनीय वाचायी आशीषों को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

स्थाई रूप में पाने के लिए उन्हें उनकी भूमि पर लौटा ले आएगा। सुनिए किस प्रकार व्यवस्थाविवरण 4:30-31 में मूसा ने वाचायी आशीषों की पराकाष्ठा का वर्णन किया:

> अन्त के दिनों में जब तुम संकट में पड़ो, और ये सब विपत्तियां तुम पर आ पड़ेंगी, तब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो और उसकी मानना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु ईश्वर है, वह तुम को न तो छोड़ेगा और न नष्ट करेगा, और जो वाचा उसने तेरे पितरों से शपथ खाकर बान्धी है उसको नहीं भूलेगा। (व्यवस्थाविवरण 4:30-31)

4:30 में अंतिम पुनर्स्थापना के इस समय के लिए एक तकनीकी शब्द की रचना की। उसने कहा कि बंधुआई के बाद की इस्राएल की पुनर्स्थापना "बाद के दिनों" में होगी। इस अभिव्यक्ति के पीछे इब्रानी शब्द है बाहरित हायामिम (הַיָּ מִים בְּאַחֲ רִי תֹ)। अधिकांश विषयों में इस प्रकार के शब्दों का सामान्य अर्थ होता था अनिश्चित प्रकार का "भविष्य"। परन्तु यहां व्यवस्थाविवरण 4:30 में हम इस शब्द का तकनीकी प्रयोग पाते हैं, जो है, "अंत के दिन" या "इतिहास की पूर्णता"। भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में यह तकनीकी प्रयोग कई जगहों पर प्रकट होता है, यशायाह 2:2; मीका 4:1; और होशे 3:5। नए नियम में ऐसी ही अभिव्यक्ति प्रेरितों के काम 2:17; इब्रानियों 1:2 और याकूब 5:3 में पाई जाती है। वास्तव में, यही वह अभिव्यक्ति है जिसमें से हमें हमारा धर्मविज्ञानी शब्द "युगांतशास्त्र" मिलता है, जिसका अर्थ है- अंत के बारे में या अंत की घटनाओं का अध्ययन।

हम मूसा के युगांतशास्त्र को इस प्रकार से सारगर्भित कर सकते हैं। मूसा जानता था कि इस्राएल एक गंभीर पाप में गिरने जा रहा था और अपनी भूमि से बंधुआई में जाने वाला था। परन्तु जब एक बार लोग उस भूमि से बाहर हो जाएंगे तो वे पश्चाताप करेंगे और परमेश्वर से क्षमा प्राप्त करेंगे। और तब बाद के दिनों में उन्हें प्रतिज्ञा की भूमि में लाया जाएगा और वे अद्भुत आशीषों को प्राप्त करेंगे। मूसा का आधारभूत दृष्टिकोण भविष्यवाणिय अपेक्षाओं के संपूर्ण इतिहास की पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

मूसा के इस सरल युगांतशास्त्र को मन में रखते हुए, अब हम पुराने नियम के आरंभिक भविष्यवक्ताओं के युगांतशास्त्र को देखने के लिए तैयार हैं। भविष्यवक्ताओं ने किस प्रकार बंधुआई से पहले इतिहास की गति को अंतिम दिनों में इसकी पूर्णता की ओर देखा?

आरंभिक भविष्यवक्ताओं का युगांतशास्त्र

अब इस अध्याय में जब हम आरंभिक भविष्यवाणिय अपेक्षाओं के बारे में बात करते हैं तो हमारे मन में वे भविष्यवक्ता हैं जिन्होंने दानिय्येल के समय तक सेवकाई की थी। दानिय्येल के समय तक के भविष्यवक्ताओं के पास युगांतसंबंधी एक आधारभूत दृष्टिकोण था जो मूसा के दृष्टिकोण से बहुत मिलता जुलता था। हम आरंभिक भविष्यवाणिय युगांतशास्त्र के दो पहलुओं को देखेंगे: पहला, मूसा के साथ समानता; और दूसरा, मूसा के अतिरिक्त बातें। आइए पहले हम उन समानताओं को देखें जो आरंभिक भविष्यवाणिय युगांतशास्त्र की मूसा के द्वारा स्थापित आधारभूत प्रारूपों के साथ थीं।

मूसा के साथ समानताएं

मूसा ने राष्ट्रीय दण्ड के प्रारूप को प्रस्तुत किया जो बंधुआई में लेकर जाता है, उसके बाद पश्चाताप आता है जो एक बड़ी पुनर्स्थापना की ओर लेकर जाता है। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने अपना अधिकांश समय आने वाली बंधुआई की चेतावनी देने में बिताया। फिर से, मूसा का अनुसरण करते हुए दानिय्येल से पहले के भविष्यवक्ताओं ने कभी इस आशा को नहीं छोड़ा कि बंधुआई में पश्चाताप होगा और क्षमा मिलेगी। वास्तव में, भविष्यवक्ता मानते थे कि परमेश्वर अलौकिक रूप से बंधुआई में अपने बचे हुए लोगों को नया जीवन देगा और उन्हें क्षमा प्रदान करेगा। जैसे कि यशायाह 10:20 में यशायाह लिखता है:

> उस समय इस्राएल के बचे हुए लोग और याकूब के घराने के भागे हुए, अपने मारने वाले पर फिर कभी भरोसा न रखेंगे, परन्तु यहोवा जो इस्राएल का पवित्र है, उसी पर वे सच्चाई से भरोसा रखेंगे। (यशायाह 10:20)

यिर्मयाह ने भी इसी प्रकार कार्य किया जब उसने घोषणा की कि जिन लोगों को बंधुआई में ले जाया जाएगा, वे परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति विश्वासयोग्यता और आज्ञाकारिता के एक नए हृदय को प्राप्त करेंगे। यिर्मयाह 31:33 में हम बंधुआई में जाने वालों के विषय में ये शब्द पढ़ते हैं:

> मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। (यिर्मयाह 31:33)

आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने उनमें हृदय-परिवर्तन की अपेक्षा की जिन्हें बंधुआई में ले जाया गया था।

परन्तु पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने यह भी पुष्टि की कि पश्चाताप करने वाले बचे हुए लोग इस्राएल की भूमि पर एक बड़ी पुनर्स्थापना के लिए पुनः एकत्रित किए जाएंगे। एक बार फिर यशायाह के शब्द इसका सटीकता से वर्णन करते हैं। यशायाह 44:21-22 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> हे याकूब, हे इस्राएल, इन बातों को स्मरण कर, तू मेरा दास है, मैं ने तुझे रचा है; हे इस्राएल, तू मेरा दास है, मैं तुझ को न बिसराऊंगा। मैं ने तेरे अपराधों को काली घटा के समान और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है; मेरी ओर फिर लौट आ, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है। (यशायाह 44:21-22)

आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने स्पष्ट कर दिया कि मूसा का आधारभूत युगांतशास्त्र सही था। इस्राएल बंधुआई में जा रहा था और पश्चाताप एवं क्षमा भूमि पर उनकी पुनर्स्थापना की ओर अगुवाई करेंगे। परन्तु आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने मूसा के इस आधारभूत प्रारूप में कुछ ख़ास विशेषताओं को भी जोड़ा।

मूसा के अतिरिक्त बातें

सरल रूप में कहें तो एक मुख्य वाचायी घटना मूसा और आरंभिक भविष्यवक्ताओं के बीच घटी, और यह वाचा निसंदेह दाऊद के साथ की गई राजशाही वाचा थी। फलस्वरूप, आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने युगांतशास्त्र या अंत समय के विषय में मूसा के चित्रण में तीन मुख्य बातों को जोड़ा। पहला, उनका

ध्यान राजतंत्र पर था; दूसरा, उनका ध्यान मन्दिर पर था; और तीसरा, उनका ध्यान गैरयहूदी राष्ट्रों पर था। आइए पहले देखें कि आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने राजतंत्र के साथ स्वयं को किस प्रकार जोड़ा।

राजतंत्र

एक ओर तो, मूसा के विपरीत, आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने केवल यह नहीं कहा कि राष्ट्र पराजय और प्राकृतिक आपदाओं का सामना करेगा। क्योंकि दाऊद का सिंहासन परमेश्वर के लोगों के जीवन का मुख्य हिस्सा बन गया था, इसलिए इन भविष्यवक्ताओं के अनुसार परमेश्वर के दण्ड में दाऊद के सिंहासन से अलग होना भी शामिल होगा। उदाहरण के तौर पर, हम दाऊद के सिंहासन के विरूद्ध दण्ड के बारे में पढ़ते हैं जब यशायाह 39:5-7 में यशायाह ने राजा हिजकिय्याह को डांटा:

> तब यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, सेनाओं के यहोवा का यह वचन सुन ले: ऐसे दिन आने वाले हैं, जिन में जो कुछ तेरे भवन में है और जो कुछ आज के दिन तक तेरे पुरखाओं का रखा हुआ तेरे भण्डारों में हैं, वह सब बाबुल को उठ जाएगा; यहोवा यह कहता है कि कोई वस्तु न बचेगी। और जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हों, उन में से भी कितनों को वे बंधुआई में ले जाएंगे; और वह खोजे बनकर बाबुल के राजभवन में रहेंगे। (यशायाह 39:5-7)

दाऊद के सिंहासन से अलग होना बंधुआई का एक पहलू था जिसने परमेश्वर के लोगों के इतिहास को पूरा किया।

दाऊद के सिंहासन के विरूद्ध दण्ड की त्रासदी के बावजूद भी भविष्यवक्ताओं ने इस्राएल को यह आश्वासन दिया कि दाऊद के सिंहासन के विषय में परमेश्वर का कार्य समाप्त नहीं हुआ है। इसकी अपेक्षा, भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की कि बंधुआई के बाद इस्राएल की पुनर्स्थापना में दाऊद के सिंहासन को महिमान्वित करना भी शामिल होगा। सुनिए किस प्रकार यिर्मयाह 23:5-6 में यिर्मयाह ने दाऊद के सिंहासन की पुनर्स्थापना का वर्णन किया:

> यहोवा की यह भी वाणी है, देख ऐसे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के कुल में एक धर्मी अंकुर उगाऊंगा, और वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा, और अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता करेगा। उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे, और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे: और यहोवा उसका नाम यहोवा "हमारी धामिर्कता" रखेगा। (यिर्मयाह 23:5-6)

दाऊद के एक धर्मी पुत्र होने की प्रतिज्ञा पुनर्स्थापना के बाद के दिनों के चित्रण का एक आधारभूत हिस्सा बन गई।

आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने न केवल दाऊद के सिंहासन के विषय में ही बात की, बल्कि उन्होंने दाऊद के पुत्र सुलेमान द्वारा बनाए गए मन्दिर पर भी ध्यान दिया।

मन्दिर

अनेक इस्राएलियों ने भ्रांतिपूर्वक यह मान लिया था कि यरूशलेम में परमेश्वर का मन्दिर अलंघ्य था। भविष्यवक्ताओं को यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर के नष्ट किए जाने के बारे में साहस के साथ बोलना पड़ा। उदाहरण के तौर पर, यिर्मयाह ने उन झूठे भविष्यवक्ताओं और याजकों के विरूद्ध मजबूती के साथ बोला जिन्होंने जोर दिया था कि मन्दिर को कभी नष्ट नहीं किया जा सकेगा। यिर्मयाह 7 में

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

भविष्यवक्ता ने लोगों को इस झूठी शिक्षा को न मानने की चेतावनी दी। पद 4 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> तुम लोग यह कह कर झूठी बातों पर भरोसा मत रखो, कि यही यहोवा का मन्दिर है; यही यहोवा का मन्दिर, यहोवा का मन्दिर। (यिर्मयाह 7:4)

यहोवा के सच्चे भविष्यवक्ताओं ने एकरूपता में यह घोषणा की कि परमेश्वर के मन्दिर को बंधुआई के समय में नष्ट किया जाएगा।

फिर भी, भविष्यवक्ताओं ने यह भी प्रतिज्ञा की कि बंधुआई के बाद पुनर्स्थापना के समय में एक महिमामय मन्दिर की पुनर्स्थापना की जाएगी। किसी अन्य भविष्यवक्ता की अपेक्षा यहेजकेल ने पुनर्स्थापना के समय में इस महिमामय मन्दिर के पुनर्निर्माण पर ध्यान दिया। उसकी पुस्तक के 40-48 अध्याय इस विषय पर ध्यान देते हैं। परमेश्वर ने यहेजकेल को मन्दिर की पुनर्स्थापना की एक विशेष तस्वीर प्रदान की और इसका निर्माण करने के लिए लोगों को आज्ञा दी। यहेजकेल 43:10-11 में यहेजकेल के लिए परमेश्वर के शब्दों को सुनें:

> हे मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल के घराने को इस भवन का नमूना दिखा कि वे अपने अधर्म के कामों से लज्जित हो कर उस नमूने को मापें। और यदि वे अपने सारे कामों से लज्जित हों, तो उन्हें इस भवन का आकार... बतलाना, और उनके साम्हने लिख रखना; जिस से वे इसका सब आकार और इसकी सब विधियां स्मरण कर के उनके अनुसार करें। (यहेजकेल 43:10-11)

आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने दाऊद के सिंहासन और मन्दिर के विषय को जोड़ा। परन्तु उन्होंने एक तीसरे विषय को भी जोड़ा जिसे मूसा ने स्पष्टता के साथ संबोधित नहीं किया था- वे गैरयहूदी राष्ट्रों के विषय के प्रति भी गंभीर थे।

गैरयहूदी

पहली बात यह थी कि भविष्यवक्ताओं ने बहुत स्पष्टता के साथ देख लिया था कि इस्राएल की बंधुआई का अर्थ होगा कुछ गैरयहूदी राष्ट्रों की परमेश्वर के लोगों पर विजय। जैसे कि हम जानते हैं, उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि असीरियाई और बेबीलोनी लोगों ने इस्राएल पर विजय प्राप्त की और परमेश्वर के लोगों के साथ दुर्व्यवहार किया।

इस्राएल की बंधुआई के दौरान जब गैरयहूदियों को विजय प्रदान की गई, तो आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने यह भी घोषणा की कि गैरयहूदियों का यह शासन सदा के लिए नहीं रहेगा। बंधुआई से पुनर्स्थापना में परमेश्वर दाऊद के पुनर्स्थापित सिंहासन के द्वारा उन गैरयहूदी राष्ट्रों को नष्ट करेगा जिन्होंने उसके लोगों से दुर्व्यवहार किया था। परमेश्वर गैरयहूदी राष्ट्रों को पराजित करेगा और गैरयहूदी राष्ट्रों के विरूद्ध युद्ध में इस्राएल को एक बड़ी विजय देगा। भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में यह विषय कई रूपों में प्रकट होता है, परन्तु जिस एक नाटकीय रूप में यह सामने आता है, वह है "यहोवा के दिन" की तकनीकी अभिव्यक्ति, जिसे इब्रानी में योम याहवे (יוֹם יְהוָה) कहते हैं। इस शब्द समूह के पीछे का मुख्य विचार यह था कि यहोवा एक ही दिन में अपने सारे शत्रुओं को नाश करने में सक्षम है, और इस कारण "यहोवा के दिन" को उससे संबंधित कहा जाता है, उसी प्रकार जैसे कि विजयी सैनिक आज भी युद्ध में जाते हुए कहते हैं, "आज का दिन हमारा है!"

यह शब्द समूह इस रूप में विशेषकर शक्तिशाली है जिस प्रकार यह इस्राएल की बंधुआई और इस्राएल की पुनर्स्थापना के बीच एक विषमता को दर्शाता है। शायद इसको देखने का सबसे अच्छा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तरीका यह देखना है कि भविष्यवक्ता योएल किस प्रकार "यहोवा के दिन" की अभिव्यक्ति का इस्तेमाल करता है। यह अभिव्यक्ति योएल 1:15, 2:1, 2:11, 2:31 और 3:14 में प्रकट होती है। "यहोवा के दिन" के पहले तीन उल्लेख परमेश्वर द्वारा यहूदा को पराजित करने के विषय में हैं। वाचा के लोग अपने पापों के कारण परमेश्वर के शत्रु बन गए थे, और यहोवा का "दिन" वह समय था जब वह उन्हें नाश करेगा और बंधुआई में भेज देगा।

परन्तु अपनी पुस्तक के दूसरे भाग में योएल ने इस शब्द समूह के अपने प्रयोग में परिवर्तन किया। उसने एक अन्य घटना का वर्णन "यहोवा के दिन" के रूप में किया। यह "यहोवा का दिन" तब होगा जब इस्राएल की बंधुआई से पुनर्स्थापना होगी। यह परमेश्वर द्वारा उन राष्ट्रों की हार होगी जिन्होंने परमेश्वर के लोगों को सताया था। उदाहरण के तौर पर योएल 2:31-32 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले सूर्य अन्धियारा होगा और चन्द्रमा रक्त सा हो जाएगा। उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा; और यहोवा के वचन के अनुसार सिय्योन पर्वत पर, और यरूशलेम में जिन बचे हुओं को यहोवा बुलाएगा, वे उद्धार पाएंगे। (योएल 2:31-32)

अतः हम देखते हैं कि योएल के लिए "यहोवा के दिन" ने केवल परमेश्वर के लोगों के दण्ड को ही नहीं दर्शाया, बल्कि इसने उस बड़े युद्ध को भी दर्शाया जो तब होगा जब परमेश्वर के लोग अपनी भूमि में पुनर्स्थापित होंगे।

इससे पहले कि हम इस्राएल के युगांतशास्त्र में गैरयहूदियों के विषय को छोड़ें, हमें एक अंतिम बात का उल्लेख करना जरूरी है- गैरयहूदियों के जुड़ने से इस्राएल का विस्तार। जब इस्राएलियों की पुनर्स्थापना के समय "यहोवा का दिन" गैरयहूदियों के विरुद्ध आता है, तो सारे गैरयहूदी नाश नहीं होंगे। इसके विपरीत, युद्ध के बाद अनेक गैरयहूदी परमेश्वर के लोगों के पास आएंगे और एकमात्र सच्चे और जीवित परमेश्वर की आराधना में उनके साथ जुड़ेंगे। जैसे कि भविष्यवक्ता यशायाह 2:2-3 में इसे कहता है:

> अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊँचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा के समान उसकी ओर चलेंगे। 3बहुत से देशों के लोग आएँगे, और आपस में कहेंगे : "आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएँ; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे।" (यशायाह 2:2-3)

यह अनुच्छेद और ऐसे कई अन्य अनुच्छेद पुराने नियम की आरंभिक भविष्यवाणी युगांतशास्त्रीय आशाओं की पूर्णता को दर्शाते हैं। परमेश्वर की आशीषें इस्राएल पर उंडेली जाएंगी, परन्तु इन आशीषों में अनगिनत गैरयहूदियों का सच्चे विश्वास में जुड़ना भी शामिल होगा ताकि परमेश्वर के वाचायी लोग सारी पृथ्वी में भर जाएं। यह नया आकाश और नई पृथ्वी परमेश्वर के ज्ञान से भरा संसार होगा। पृथ्वी पर शांति होगी और बचे हुए सब लोग सच्चे और जीवित परमेश्वर की आराधना करेंगे।

अतः हम देखते हैं कि आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने मूसा द्वारा स्थापित मूलभूत प्रारूप का अनुसरण किया। उन्होंने माना कि बंधुआई आने वाली थी, परन्तु पश्चाताप और क्षमा उस अंत समय या बड़ी पुनर्स्थापना की ओर अगुवाई करेगा। अब, इस मूलभूत प्रारूप में भविष्यवक्ताओं ने कई महत्वपूर्ण

विषयों को जोड़ा: पहला, दाऊद के सिंहासन की केन्द्रीयता; दूसरा, मन्दिर का महत्व; और तीसरा, वह बहुत ही विशेष भूमिका जो गैरयहूदी इस्राएल की बंधुआई और परमेश्वर के लोगों की बड़ी पुनर्स्थापना में निभाएंगे।

हमने मूसा के युगांतशास्त्र के आधार एवं आरंभिक भविष्यवाणिय युगांतशास्त्र की समानताओं और परिवर्तनों को देख लिया है। अब हम इस अवस्था में हैं कि बाद के भविष्यवाणिय युगांतशास्त्र के विकास का अवलोकन करेंगे।

बाद के भविष्यवक्ताओं का युगांतशास्त्र

अन्य अध्यायों में हमने देखा है कि हस्तक्षेप करने वाली ऐतिहासिक संभावनाएं परमेश्वर द्वारा भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों को पूरा करने के तरीकों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती हैं। कई रूपों में बाद के भविष्यवक्ताओं में हम पुराने नियम की एक हस्तक्षेप करने वाली एक बड़ी ऐतिहासिक संभावना को पाते हैं। हम पाएंगे कि परमेश्वर के लोगों की प्रतिक्रियाओं का उन रूपों पर बड़ा प्रभाव पड़ा जिनमें बाद के दिन या अंत के दिन प्रदर्शित होंगे।

जब हम इस विषय को देखते हैं, तो हम तीन विषयों को देखेंगे: पहला, यिर्मयाह की अपेक्षा; दानिय्येल की अन्तर्दृष्टि; और अंत में पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के अंतिम दृष्टिकोण। पहले, आइए उस विशेष अपेक्षा को देखें जो यिर्मयाह ने इस्राएल की पुनर्स्थापना के विषय में रखी थी।

यिर्मयाह की अपेक्षा

अधिकांश रूपों में यिर्मयाह ने आरंभिक बाइबलीय भविष्यवाणी के प्रारूप का अनुसरण किया है। दो अनुच्छेदों में यिर्मयाह ने कुछ ऐसी बात को जोड़ा है जिसे पहले कभी नहीं जाना गया था। उसने भविष्यवाणी की कि बंधुआई का समय 70 वर्ष होगा। 25:11-12 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> सारी जातियों का यह देश उजाड़ ही उजाड़ होगा, और ये सब जातियां सत्तर वर्ष तक बाबुल के राजा के आधीन रहेंगी। जब सत्तर वर्ष बीत चुकें, तब मैं बाबुल के राजा और उस जाति के लोगों और कसदियों के देश के सब निवासियों को अधर्म का दण्ड दूंगा। (यिर्मयाह 25:11-12)

इसी प्रकार, यिर्मयाह 29:10-11 यह कहता है:

> यहोवा यों कहता है कि बाबुल के सत्तर वर्ष पूरे होने पर मैं तुम्हारी सुधि लूंगा, और अपना यह मनभवना वचन कि मैं तुम्हें इस स्थान में लौटा ले आऊंगा, पूरा करूंगा। क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नहीं, वरन कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूंगा। (यिर्मयाह 29:10-11)

हम देखते हैं कि यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की कि 70 वर्षों में बंधुआई समाप्त हो जाएगी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

वास्तव में, 2 इतिहास 36:21-22 के अनुसार यह भविष्यवाणी तब पूरी हुई जब जेरूब्बाबेल की अगुवाई में 539 ई.पू. में पहले समूह के लोग भूमि पर वापिस लौटे। जकर्याह 1:12 और जकर्याह 7:5 में जकर्याह ने भी इस समय की पुष्टि की। अतः हम देखते हैं कि यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की कि बंधुआई 70 वर्षों तक रहेगी, और कुछ रूपों में वह उतनी ही रही। 539 ई.पू. में फारसी सम्राट कुस्रू ने घोषणा की कि इस्राएली अपनी भूमि पर पुनः लौटें और अपने मन्दिर का पुनर्निर्माण करें।

सत्तर वर्षों की यिर्मयाह की अपेक्षा को मन में रखते हुए, हम युगांत में दानिय्येल की नई अन्तर्दृष्टि को देखने के लिए तैयार हैं।

दानिय्येल की अन्तर्दृष्टि

भविष्यवाणी में दानिय्येल का सबसे महत्वपूर्ण योगदान दानिय्येल अध्याय 9 में सत्तर सप्ताहों का प्रसिद्ध दर्शन था। यह अनुच्छेद उस अन्तर्दृष्टि का आत्मकथात्मक वर्णन है जो दानिय्येल को 539 ई.पू. के लगभग मिला था जब कुस्रू ने इस्राएलियों को प्रतिज्ञा की भूमि पर लौटने का आदेश दिया।

दानिय्येल अध्याय 9 पद 1-3 में परिचय के साथ आरंभ होता है। वहां दानिय्येल दर्शाता है कि वह बंधुआई के सत्तर वर्षों के विषय में यिर्मयाह की भविष्यवाणी को पढ़ रहा था। पद 2 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> मुझ दानिय्येल ने शास्त्र के द्वारा समझ लिया कि यरूशलेम की उजड़ी हुई दशा यहोवा के उस वचन के अनुसार, जो यिर्मयाह नबी के पास पहुंचा था, कुछ वर्षों के बीतने पर अर्थात सत्तर वर्ष के बाद पूरी हो जाएगी। (दानिय्येल 9:2)

अब दानिय्येल जानता था कि यिर्मयाह ने कहा था कि बंधुआई 70 वर्षों की ही होगी, परन्तु, जैसे कि हमें दानिय्यल से आशा थी, आनन्दित होने की अपेक्षा, पद 3 बताता है कि दानिय्येल ने कुछ अलग सा किया:

> तब मैं अपना मुख परमेश्वर की ओर कर के गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करने लगा, और उपवास कर, टाट पहिन, राख में बैठ कर वरदान मांगने लगा। (दानिय्येल 9:3)

यद्यपि हमें दानिय्येल से आशा थी कि वह प्रसन्न होगा कि यिर्मयाह द्वारा बताए हुए 70 वर्ष पूरे हो गए, इसकी अपेक्षा वह परमेश्वर के अनुग्रह को पाने के प्रयास में टाट और राख में यहोवा की ओर मुड़ा।

पद 4 से 19 में हम दानिय्येल की प्रार्थना के सारांश को पाते हैं। इस प्रार्थना में, वह एक बहुत ही गंभीर समस्या के बारे में बात करता है। यिर्मयाह के 70 वर्ष पूरे हो चुके हैं, परन्तु लोगों ने अपने पापों से पश्चाताप नहीं किया है। जैसा कि वह पद 13 और 14 में कहता है:

> यह सारी विपत्ति हम पर आ पड़ी है, तौभी हम अपने परमेश्वर यहोवा को मनाने के लिये न तो अपने अधर्म के कामों से फिरे, और न तेरी सत्य बातों पर ध्यान दिया... परन्तु हम ने उसकी नहीं सुनी। (दानिय्येल 9:13-14)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दानिय्येल वह समझ गया था जो हम इस अध्याय के आरंभ में देख चुके हैं। मूसा ने घोषणा की कि बंधुआई तभी समाप्त की जाएगी जब परमेश्वर के लोग अपने पापों से पश्चाताप करेंगे, परन्तु वहां पर अनपेक्षित हस्तक्षेप करने वाली संभावना प्रकट होती है। इस्राएली बंधुआई में जा चुके थे, परन्तु उन्होंने अभी भी अपने पापों से पश्चाताप नहीं किया था, और फलस्वरूप, उन तरीकों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए जिनमें परमेश्वर ने अपनी अंत की योजना का क्रियान्वयन किया।

दानिय्येल ने दया के विनती के साथ अपनी प्रार्थना को समाप्त किया। क्योंकि लोगों ने अपने विद्रोह से पश्चाताप नहीं किया था, इसलिए दानिय्येल ने परमेश्वर से केवल अपनी महिमा के कारण लोगों को लौटाने की विनती की। हम पद 17 और 18 में पढ़ते हैं:

> अपने उजड़े हुए पवित्र स्थान पर अपने मुख का प्रकाश चमका; हे प्रभु, अपने नाम के निमित्त यह कर। हे मेरे परमेश्वर, कान लगाकर सुन, आंख खोल कर हमारी उजड़ी हुई दशा और उस नगर को भी देख जो तेरा कहलाता है; क्योंकि हम जो तेरे साम्हने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करते हैं, सो अपने धर्म के कामों पर नहीं, वरन तेरी बड़ी दया ही के कामों पर भरोसा रख कर करते हैं। (दानिय्येल 9:17-18)

दानिय्येल ने सारी उम्मीदों के विपरीत उम्मीद की कि परमेश्वर अपने लोगों की पुनर्स्थापना करेगा, इस बात के बावजूद भी कि उन्होंने अपने पापों से पश्चाताप नहीं किया था।

दानिय्येल 9:20-27 के शेष भाग में हम दानिय्येल की प्रार्थना के परमेश्वर के प्रत्युत्तर को पाते हैं। स्वर्गदूत जिब्राएल परमेश्वर की ओर से एक संदेश लेकर आता है। वह दानिय्येल को 9:24 में यह बताता है:

> तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित्त किया जाए, और युग-युग की धार्मिकता प्रगट हो, और दर्शन की बात पर और भविष्यवाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए। (दानिय्येल 9:24)

सरल रूप में कहें तो जिब्राएल कहता है कि बंधुआई यिर्मयाह के 70 वर्षों से बढ़कर “सात” बार सत्तर वर्षों या लगभग 490 वर्षों की हो गई थी। क्योंकि लोगों ने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया था, इसलिए परमेश्वर ने बंधुआई की अवधि को सातगुणा बढ़ाने का निर्णय किया। जैसा कि परमेश्वर ने लैव्यवस्था 26:18 में कहा था:

> और यदि तुम इन बातों के उपरान्त भी मेरी न सुनो, तो मैं तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें सातगुणी ताड़ना और दूंगा (लैव्यवस्था 26:18)

परमेश्वर ने इस्राएल की पुनर्स्थापना में देर कर दी और प्रतिज्ञा की भूमि का नियंत्रण एक गैरयहूदी साम्राज्य से दूसरे गैरयहूदी साम्राज्य को मिलता रहा, जब तक मसीह में परमेश्वर का राज्य नहीं आ गया।

जब हम बंधुआई के विषय में यिर्मयाह की सत्तर वर्षों की भविष्यवाणी को देख चुके और यह भी देख चुके हैं कि किस प्रकार दानिय्येल ने सीखा कि यह सातगुणा बढ़कर 490 वर्षों की हो जाएगी, अब हम इस अवस्था में हैं कि पुराने नियम के भविष्यवाणिय युगांतशास्त्र के अंतिम चरणों को देखें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अंतिम दृष्टिकोण

पुराने नियम की भविष्यवाणी के अंतिम चरण पुनर्स्थापना के समय में हुए जब कुछ इस्राएली बंधुआई से छूटकर प्रतिज्ञा की भूमि पर लौट चुके थे। यह समझने के लिए कि पुराने नियम का युगांतशास्त्र इस अंतिम चरण में कैसा प्रतीत होता था, हम दो विषयों को देखेंगे: पहला, आरंभिक पुनर्स्थापना की आशाएं; और दूसरा, बाद की पुनर्स्थापना की आशाएं। आइए, पहले हम उन भविष्यवक्ताओं की आरंभिक आशाओं पर ध्यान दें जिन्होंने बेबीलोन से अपनी भूमि पर लौटने वाले इस्राएलियों के पहले समूहों के आरंभिक समयों में सेवा की।

आरंभिक आशाएं

इस बिंदू पर हम 539 से 515 ई.पू. तक के पुनर्स्थापना के आरंभिक समय पर ध्यान देंगे। इस समय के दौरान, इस्राएलियों के छोटे-छोटे समूह इस आशा के साथ अपनी भूमि पर लौटे कि वे परमेश्वर की आशीषों को बहुत ही शीघ्र परमेश्वर के पुनर्स्थापित लोगों पर देखेंगे। कई रूपों में उन्होंने पश्चाताप करने और विश्वासयोग्यता के साथ यहोवा की सेवा करने के द्वारा दानिय्येल की 490 वर्षों की देरी को कम करने की आशा की। हाग्गै और जकर्याह ने युगांतसबंधी चार आशाओं पर ध्यान दिया: दाऊद के सिंहासन की पुनर्स्थापना, गैरयहूदी राष्ट्रों पर विजय, मन्दिर की पुनर्स्थापना, और प्रकृति का नवीनीकरण। हाग्गै और जकर्याह के पास परमेश्वर के लोगों के लिए बड़ी आशीषें थीं। उन्होंने आशा की थी कि इस समय पर परमेश्वर के लोगों की विश्वासयोग्यता इस नए बने हुए राष्ट्र के लिए अनेक आशीषें लाएगी।

इस्राएल के अपनी भूमि पर लौटने के बाद के आरंभिक वर्षों में यद्यपि जेरूब्बाबेल और मन्दिर में आशाएं बहुत ऊंची थीं, परन्तु यह स्थिति ज्यादा समय तक नहीं रही। इसकी अपेक्षा, हम यह पाते हैं कि बाद की पुनर्स्थापना की आशाओं ने एक अलग मोड़ ले लिया था। जेरूब्बाबेल ने हाग्गै और जकर्याह के निर्देशों के अनुसार मन्दिर का निर्माण पूरा कर दिया था, परन्तु जैसे कि हम जकर्याह की पुस्तक के अंतिम आधे भाग, एज्रा, नहेम्याह, और मलाकी की पुस्तकों को पढ़ते हैं तो हम पाते हैं कि इस्राएल के लोग केवल बाहरी रूप से ही परमेश्वर की इच्छा की अनुपालना कर रहे थे। एक ही पीढ़ी में हम गैरयहूदी स्त्रियों के साथ विवाह के व्यापक प्रचलन को पाते हैं और इसके फलस्वरूप व्यापक अधार्मिकता फैलती है। अतः बंधुआई के बाद के आरंभिक समय में इस्राएल को मिलने वाली बड़ी आशीषों की आशाएं एक दूर भविष्य में ले जाई जाती हैं।

अंतिम आशीषें

बाद के अन्य किसी भविष्यवक्ता से अधिक मलाकी ने इस दूर की आशा पर ध्यान दिया। उसने यरूशलेम में रहने वालों को डांटा और चेतावनी दी कि दण्ड और आशीष का दिन भविष्य में आ रहा है। उदाहरण के लिए, हम मलाकी 3:1 में इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूँ, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु, जिसे तुम ढूंढ़ते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा, हां वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। (मलाकी 3:1)

और 4:1-2 में उसके अंतिम शब्दों में मलाकी बताता है कि भविष्य के उस महान् दिन में क्या होगा:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> क्योंकि देखो, वह धधकते भट्ठे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूंटी बन जाएंगे; और उस आने वाले दिन में वे भस्म हो जाएंगे... सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। परन्तु तुम्हारे लिये जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे; और तुम निकल कर पाले हुए बछड़ों की नाई कूदोगे और फांदोगे। (मलाकी 4:1-2)

जैसे पुराना नियम समाप्त हुआ, तो यह स्पष्ट हो गया कि यह उद्धार जल्दी आने वाला नहीं था। परमेश्वर के लोगों को संपूर्ण पुनर्स्थापना के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

हम देख चुके हैं कि पुराने नियम में मूसा के साथ युगांतशास्त्र आरंभ हुआ और आरंभिक भविष्यवक्ताओं ने राजशाही एवं मन्दिर के विषयों को इसमें जोड़कर कई अन्तर्दृष्टियों को खोला। अब हमने देखा है कि दानिय्येल और पुराने नियम के अंत के भविष्यवक्ताओं ने पाया कि बंधुआई एक लम्बे समय तक रहेगी। तभी एक बड़ा दैवीय हस्तक्षेप होगा और परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना होगी। अतः यह हमें बाइबलीय युगांतशास्त्र के अंतिम चरण की ओर लेकर आता है, वह है- नए नियम का युगांतशास्त्र।

नए नियम का युगांतशास्त्र

जब कभी भी हम मसीही होने के रूप में पुराने नियम की भविष्यवाणी को पढ़ते हैं तो हमें नए नियम के लेखकों के दृष्टिकोणों का अनुसरण करना चाहिए। नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के भीतर ही युगांतशास्त्र के विकासों को समझा था, परन्तु उन्होंने इसमें यीशु की सेवकाई की वास्तविकता को जोड़ा। यीशु इस पृथ्वी पर आया और उसने युगांतशास्त्र के विकास के तरीकों में बदलाव किया, और मसीही होने के नाते हमें इस दृष्टिकोण का अनुसरण करना चाहिए जो हमें नए नियम में दिया गया है। युगांतशास्त्र की नए नियम की तस्वीर को समझा जा सकता है जब हम इन तीन विषयों पर ध्यान देते हैं: पहला, नए नियम में प्रयोग किए गए शब्द; दूसरा, नए नियम के युगांतशास्त्र की मूलभूत संरचना; और तीसरा, युगांतसंबंधी मुख्य विषय जो नए नियम में प्रकट होते हैं। आइए, पहले हम नए नियम के उन अनेक महत्वपूर्ण शब्दों को देखें जो हमें अंत समय पर नए नियम के दृष्टिकोणों का परिचय देते हैं।

शब्द

हम मुख्य रूप से महत्वपूर्ण तीन अभिव्यक्तियों पर ध्यान देंगे: पहला, शब्द “सुसमाचार”; फिर शब्द, “राज्य”; और अंत में “बाद के दिन”।

सुसमाचार

शब्द “सुसमाचार” हर विश्वासी के लिए जाना-पहचाना है। यह यूनानी शब्द यूएंगेलियोन, से लिया गया है जिसका अर्थ है “शुभ संदेश”। बार-बार नया नियम हमें बताता है कि यीशु और उसके चेलों ने “सुसमाचार” या “शुभ संदेश” का प्रचार किया। नए नियम के लेखक एक सौ से अधिक बार मसीह के मसीही संदेश को सुसमाचार या शुभ संदेश के रूप में कहते हैं। यह अनुभव करना बहुत महत्वपूर्ण है कि नए नियम ने “सुसमाचार” शब्द की खोज नहीं की। इसकी अपेक्षा, नए नियम के लेखकों ने “सुसमाचार” शब्द को पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं से लिया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने इब्रानी शब्द बासर (בָּשַׂר) का इस्तेमाल किया जिसे कई अवसरों पर प्रायः "शुभ संदेश" या "खुशी के संदेश" के रूप में अनुदित किया गया है। उनके मन में क्या शुभ संदेश था? संक्षिप्त में कहें तो भविष्यवक्ताओं द्वारा प्रचार किया गया शुभ संदेश यह शुभ संदेश था कि बंधुआई समाप्त हो गई है और परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना आ रही थी। उदाहरण के तौर पर, सुनिए यशायाह 52:5-7 में भविष्यवक्ता यशायाह ने क्या कहा। पद 5 और 6 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> मेरी प्रजा सेंतमेंत हर ली गई है... जो उन पर प्रभुता करते हैं वे उधम मचा रहे हैं. . . इस कारण मेरी प्रजा मेरा नाम जान लेगी... कि जो बातें करता है वह यहोवा ही है; देखो, मैं ही हूँ। (यशायाह 52:5-6)

परमेश्वर घोषणा करता है कि उसके लोग उसकी सामर्थ के एक बड़े प्रदर्शन को देखेंगे, और वे जानेंगे कि उसने बंधुआई से पुनर्स्थापना की भविष्यवाणी की थी। तब, पुनर्स्थापना के आश्वासन पर ध्यान देते हुए, यशायाह पद 7 में यह कहता है:

> पहाड़ों पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है, तेरा परमेश्वर राज्य करता है। (यशायाह 52:7)

यशायाह ने घोषणा की कि कुछ संदेशवाहकों का प्रकटीकरण देखने में बहुत ही सुन्दर होगा। किस प्रकार के संदेशवाहकों का? उनका जो शुभ संदेश या "सुसमाचार" लेकर आए।

अब, शब्द "सुसमाचार" की भविष्यवाणिय पृष्ठभूमि यह समझने में हमारी सहायता करता है कि क्यों यीशु और उसके चेले मसीह के सुसमाचार की घोषणा करते हुए आए। यीशु बंधुआई से पुनर्स्थापना लाया। लूका 4:18-19 में यीशु ने यशायाह 61:1-2 को उद्धृत किया, और उसने उसे अपने जीवन पर लागू किया:

> प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं। और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं। (लूका 4:18-19)

जैसे कि यह अनुच्छेद स्पष्ट करता है, यीशु ने स्वयं को इस प्रकार देखा जो परमेश्वर के लोगों के पास बंधुआई से पुनर्स्थापना को लेकर आया।

नए नियम में एक दूसरा महत्वपूर्ण शब्द इसी प्रकार के दृष्टिकोण को प्रकट करता है। यह शब्द है, "राज्य"।

राज्य

नए नियम ने बहुत बार नए नियम के युग को राज्य के युग के रूप में सारगर्भित किया है। नए नियम में यह शब्द इतना महत्वपूर्ण क्यों था? शब्द राज्य एक अन्य तरीका था जिसमें नए नियम ने यह माना कि यीशु ने बंधुआई के बाद पुनर्स्थापना की आशाओं को पूरा किया था। यशायाह 52:7 में आने वाली पुनर्स्थापना के विषय में यशायाह की भविष्यवाणी को एक बार फिर से सुनिए। वहां उसने इस प्रकार से सुसमाचार को परमेश्वर के राज्य के साथ जोड़ा:

> पहाड़ों पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है, तेरा परमेश्वर राज्य करता है। (यशायाह 52:7)

ये अंतिम शब्द "तेरा परमेश्वर राज्य करता है।" परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना और संसार के ऊपर उनकी विजय की घोषणा करते हैं, और यह घोषणा हमें परमेश्वर के राज्य पर यीशु की शिक्षाओं की पृष्ठभूमि प्रदान करती है। यीशु ने घोषणा की कि उसमें पुनर्स्थापना आई है क्योंकि पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य स्थापित हो रहा था।

एक तीसरी अभिव्यक्ति "बाद के दिन" भी हमें अंत समय पर नए नियम के दृष्टिकोणों को समझने में सहायता करती है।

बाद के दिन

आपको याद होगा कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने शब्द-समूह "बाद के दिन" का प्रयोग बंधुआई के बाद के समय का वर्णन करने के लिए किया। नए नियम के लेखकों ने इसी अभिव्यक्ति का प्रयोग नए नियम के समय का वर्णन करने के लिए किया। उदाहरण के तौर पर, हम प्रेरितों के काम 2:17 में इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> परमेश्वर कहता है, कि अन्त कि दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा। (प्रेरितों के काम 2:17)

नए नियम के लेखक बार-बार नए नियम के सारे समय को ऐस्खाटोन या बाद के दिनों के रूप में दर्शाते हैं। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे पुराने नियम के भविष्यवाणिय शब्दों पर निर्भर थे। उन्होंने नए नियम के युग को भविष्यवाणिय अपेक्षाओं की पूर्णता, अर्थात् परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना के रूप में देखा। नए नियम के महत्वपूर्ण शब्द प्रकट करते हैं कि नए नियम के लेखकों ने अपने युग को पुराने नियम की युगांतसंबंधी आशाओं की पूर्णता के रूप में देखा। संक्षिप्त में, मानवीय इतिहास का अंतिम चरण मसीह के द्वारा आया।

संरचना

नए नियम के प्रति यह ज्ञान हमें उस मूल संरचना को देखने की स्थिति में रखता है जो नया नियम पुनर्स्थापना के राज्य के लिए प्रकट करता है। युगांतशास्त्र के इस नए दृष्टिकोण को परखने के लिए हम नए नियम में वर्णित दो अपेक्षाओं को देखेंगे: पहला, यूहन्ना बपतिस्मादाता की अपेक्षाएं; और दूसरा, यीशु की अपेक्षाएं।

यूहन्ना बपतिस्मादाता

यूहन्ना बपतिस्मादाता के पास परमेश्वर के राज्य के विषय में एक ऐसी अपेक्षा थी जो उसके समय में बहुत आम थी। पुराना नियम पढ़ने के द्वारा यूहन्ना ने विश्वास किया कि जब मसीहा आएगा तो वह एक ही बार में पूरा राज्य ले आएगा। सुनिए लूका 3:16-17 में यूहन्ना ने मसीहा के बारे में कैसे बात की:

> वह आनेवाला है, जो मुझ से शक्तिमान है... वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप, उसके हाथ में है; और वह अपना खलिहान अच्छी

तरह से साफ करेगा; और गेहूं को अपने खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जो बुझने की नहीं जला देगा। (लूका 3:16-17)

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के समान यूहन्ना ने विश्वास किया कि जब इस्राएल की पुनर्स्थापना होगी तो वह तत्काल आशीष और दण्ड का समय होगा।

यीशु

पुराने नियम की एकदम से दण्ड और आशीष मिलने की इन अपेक्षाओं के कारण यीशु ने अपनी सेवकाई का अधिकांश समय अपने अनुयायियों को यह स्पष्ट करने में बिताया कि ऐस्खाटोन या अंत समय ऐसे नहीं आने वाला जैसे यूहन्ना और अन्य लोगों ने अपेक्षा की थी। इसकी अपेक्षा, परमेश्वर ने धीरे-धीरे, समय लेकर पुनर्स्थापना को लाने का निर्णय किया है। अंत समय के बारे में यीशु के नए प्रकाशन की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति मत्ती 13:31-35 के दो दृष्टांतों में पाई जाती है। वहां यीशु ने परमेश्वर के राज्य को राई के उस एक छोटे दाने के रूप में दर्शाया जो एक बड़े पौधे के रूप में बढ़ता है। उसने परमेश्वर के राज्य को खमीर के रूप में भी दर्शाया जो धीरे-धीरे पूरी रोटी को खमीरी कर देता है। इन दोनों दृष्टांतों का अर्थ है कि पुनर्स्थापना का राज्य दण्ड और आशीष के साथ एक ही बार में नहीं आएगा। इसकी अपेक्षा, यह धीरे-धीरे, चरणों में विकसित होगा।

युगांतशास्त्र पर यीशु और उसके चेलों द्वारा सिखाए गए नए नियम के दृष्टिकोण को शुरू हुए युगांत के रूप में जाना जाता है। इस शुरू हुए युगांत को कई रूपों में वर्णित किया गया है, परन्तु इसे तीन-रूपीय संरचना में देखना सहायक है। पहला, मसीह का आगमन राज्य का आरंभ था। मसीह का जीवन, मृत्यु, पुनरूत्थान, पिन्तेकुस्त और प्रेरितों की सेवकाइयों ने नींव या ऐस्खाटोन के आरंभ की रचना की। नए नियम के अनुसार पुनर्स्थापना के दूसरे चरण को राज्य की निरंतरता कहा जा सकता है। यह वह समय था जिसमें आज हम रहते हैं- मसीह के पहले आगमन के बाद परन्तु उसके द्वितीय आगमन से पहले। पुनर्स्थापना के तीसरे चरण का वर्णन राज्य की पूर्णता के रूप में किया जा सकता है। जब मसीह का पुनरागमन होगा तो भविष्यवक्ताओं द्वारा बहुत समय पहले से प्रतिज्ञा की गई पुनर्स्थापना को संपूर्ण रूप से लेकर आएगा। संपूर्ण नया नियम शुरू हुए युगांत की इस मूल संरचना में उपयुक्त बैठता है।

विषय

कुछ मुख्य शब्दों और नए नियम के दृष्टिकोणों की मूल संरचना को देखने के बाद, अब हमें युगांतशास्त्र के कुछ विषयों की ओर मुड़ना चाहिए जो पुराने नियम के साथ-साथ नए नियम में भी प्रकट होते हैं। दो मुख्य विषयों पर ध्यान देना सहायक होगा: बंधुआई का विषय और पुनर्स्थापना का विषय।

बंधुआई

पहले, आइए हम बंधुआई के विषय को देखें। आपको याद होगा कि बंधुआई का पुराने नियम का अभिप्राय इस बात पर आधारित था कि परमेश्वर ने अपने लोगों को युद्ध और प्रकृति में कड़े दण्ड की चेतावनी दी थी। बंधुआई के इन्हीं विषयों को नए नियम में आरंभ, निरन्तरता और पूर्णता की संरचना के साथ व्यवस्थित किया गया है। पहली बात यह है कि जब मसीह ने पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान अपने राज्य को आरंभ किया तो उसने प्रायः वाचायी लोगों के विरूद्ध दण्ड के शब्द कहे।

बंधुआई का विषय राज्य की निरंतरता से भी संबंधित है। एक ओर तो परमेश्वर की आशीष से आत्मिक बंधुआई मसीहा की सेवा करने से इनकार करने वाली अब्राहम की सन्तान के लिए जारी रहती है। वे परमेश्वर के राज्य की आशीषों से बाहर किए गए हैं। दूसरी ओर, उन गैरयहूदियों के लिए भी यही बात लागू होती है जो दृष्टिगोचर कलीसिया में आ चुके हैं। नया नियम बार-बार इस बात को स्पष्ट करता है

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

कि कलीसियाई अनुशासन, जिसका अंतिम चरण कलीसिया से निष्कासन होता है, वह तरीका था जिसमें कलीसिया में गैरयहूदियों और यहूदियों को दण्ड के तहत बंधुआई में भेजा जाता है जब वे परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करते हैं।

अंत में, नया नियम यह भी सिखाता है कि राज्य की पूर्णता में एक अनन्त बंधुआई भी होगी। जब मसीह का पुनरागमन होता है, तो वह अधर्मियों को दण्ड देगा और उन्हें नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की आशीषों से दूर अनन्त दण्ड में भेज देगा। इन रूपों में, हम देखते हैं कि बंधुआई का अभिप्राय नए नियम में पूरा होता है। परन्तु इस संपूर्णता को आरंभ, निरन्तरता और पूर्णता के चरणों के अनुसार आकार दिया जाता है।

निसंदेह, नया नियम बंधुआई के विषय में ऐसे ही बात नहीं करता। यह इस बात को भी स्पष्ट रूप से सिखाता है कि परमेश्वर के लोगों के लिए पुनर्स्थापना की आशीषें मसीह में आई हैं।

पुनर्स्थापना

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने सिखाया कि बाद के दिनों में परमेश्वर युद्ध और प्रकृति में अपने लोगों को असीम आशीषें देगा। नया नियम सिखाता है कि पुनर्स्थापना की ये आशीषें मसीह के राज्य के तीन चरणों में आती हैं।

पहला, राज्य के आरंभ के दौरान हम मसीह की सेवकाई की विशेषताओं में पुनर्स्थापना के अनेक विषयों को देखेंगे। जिस प्रकार पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने कहा कि दाऊद का सिंहासन पुनः स्थापित होगा, यीशु को "दाऊद का पुत्र," "राजा" कहा जाता है। जिस प्रकार पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने कहा कि मन्दिर का निर्माण बाद के दिनों में होगा, यीशु परमेश्वर का मन्दिर है। जिस प्रकार भविष्यवक्ताओं ने बुराई, गैरयहूदी राष्ट्रों और उनके देवताओं के ऊपर बड़ी विजय की भविष्यवाणी की, यीशु ने शैतान और मृत्यु की शक्ति को हराने के द्वारा अपने लोगों के लिए विजय को आरंभ किया। जिस प्रकार, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर के लोगों के लिए एक बड़ी मीरास की भविष्यवाणी की, यीशु ने पवित्र आत्मा को भेजा जो हमारी मीरास की पहली अदायगी है। और निसंदेह, जिस प्रकार भविष्यवक्ताओं ने प्रकृति में बड़ी आशीषों की बात कही, यीशु ने अपनी सेवकाई में अनगिनत शारीरिक चंगाईयां की। नया नियम सिखाता है कि यीशु का पहला आगमन परमेश्वर के लोगों की उस बड़ी संपूर्ण पुनर्स्थापना का आरंभ था।

दूसरा, पुनर्स्थापना के ये विषय राज्य की निरंतरता, अर्थात् मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच हमारे समय, की विशेषता को भी बताते हैं। यीशु राजा के समान संसार पर शासन करना जारी रखता है, जैसे कि भविष्यवक्ताओं ने दाऊद के पुत्र के बारे में भविष्यवाणी की थी। मसीह की देह अंत समय के परमेश्वर के मन्दिर के विषय में पुराने नियम के दर्शनों की पूर्णता है। अब कलीसिया को परमेश्वर का मन्दिर कहा जाता है। कलीसिया के पास विजय हैं और बुराई के विरूद्ध आत्मिक युद्ध हैं, वैसे ही जैसे भविष्यवक्ताओं ने कहा था कि परमेश्वर के लोग संसार पर विजय पाएंगे। पवित्र आत्मा कलीसिया में हमारी संपूर्ण मीरास की पहली अदायगी के रूप में कार्य करता रहता है। इससे बढ़कर, मसीही प्रायः भौतिक चंगाई और दैवीय विधान के विशेष कार्यों के साथ अपने लोगों पर परमेश्वर की आशीष को देखते हैं। इन और इन जैसे अन्य रूपों में नया नियम स्पष्ट करता है कि पुनर्स्थापना की बड़ी प्रतिज्ञाएं मसीह के राज्य की निरंतरता में पूर्णता को पाती हैं।

तीसरा, नया नियम केवल यही नहीं सिखाता कि मसीह ने पुनर्स्थापना की आशीषों का आरंभ किया उन्हें निरंतर जारी रखता है, यह हमें यह भी सिखाता है कि राज्य की पूर्णता पुराने नियम की पुनर्स्थापना की प्रतिज्ञाओं की पूर्णता को लेकर आएगी। जब यीशु का पुनरागमन होगा, तो राजतंत्र सारे संसार में फैल जाएगा जैसे कि भविष्यवक्ताओं ने कहा था कि दाऊद का पुत्र सारी जातियों पर राज्य करेगा। जब यीशु का पुनरागमन होगा, तो एक नए मन्दिर की प्रतिज्ञा पूरी होगी जैसे परमेश्वर सारी नई सृष्टि

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

को परमेश्वर के एक मन्दिर के रूप में ढ़ालेगा। परमेश्वर के लोग नई सृष्टि की अपनी संपूर्ण मीरास को प्राप्त करेंगे। और निसंदेह, प्रकृति उद्धार की महिमा में पूरी तरह से नई होकर स्वर्गलोक के समान हो जाएगी। इन और इन जैसे कई रूपों में पुनर्स्थापना की भविष्यवाणियां तब पूरी होंगी जब मसीह अपने राज्य को इसकी संपूर्णता में लेकर आएगा।

उपसंहार

युगांतशास्त्र के विकास के इस अध्याय में हमने देखा है कि इतिहास के अंत की अपेक्षाएं मूसा से आरंभिक भविष्यवक्ताओं और फिर बाद के भविष्यवक्ताओं से होते हुए नए नियम तक किस प्रकार विकसित होती हैं। हर कदम पर हमने देखा है कि परमेश्वर ने संसार की पूर्णता के लिए अपनी योजना को किस प्रकार अधिक से अधिक प्रकट किया है।

जब कभी भी हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को बंधुआई के दण्ड के बारे में बात करते हुए देखते हैं तो हमें यह नए नियम के दृष्टिकोण से देखना चाहिए। राज्य के आरंभ में, राज्य की निरंतरता में और राज्य पूर्णता में वाचा को तोड़ने वालों के लिए बंधुआई निहित है। और जब कभी भी हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को पुनर्स्थापना की भावी आशीषों के बारे में बात करते हुए पाते हैं, तो हमें यह सदैव याद रखना चाहिए कि ये आशीषें मसीह के राज्य के आरंभ, निरंतरता और पूर्णता में आती हैं। यदि हम इन दृष्टिकोणों को मन में रखते हैं तो हम पुराने नियम की भविष्यवाणियों को नए नियम के लेखकों और स्वयं यीशु की नजरों से देख सकेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।